जगदिश के गुण को जिसने भी अपने मुख से जो गाया है

जगदिश के गुण को जिसने भी,
अपने मुख से जो गाया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

तर्ज – दिल लुटने वाले।

ये भी उनकी ही माया है,
दर जिसने उसे बुलाया है,
जितना जगदीश ना भाया हे,
उतना जगदीश को भाया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

जगदिश के गुण क्या
भाग्य लिखाकर आया है,
जो कण्ठ प्रभु मन भाया है,
जन्म उसी का धन्य हुआ,
छुटी जो जग की माया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

जगदिश के गुण पूर्ण समर्पित भाव जगे,
प्रभु चरणों में मेरा ध्यान लगे,
ह्रदय द्रवित हो नेन बहे,
अश्रु बन पुष्प चडाया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

जगदिश के गुण फिर
देर नही कोई फेर नही,
यहॉ देर नही अन्धेर नही,
आवाज पे सारे साज बजे,
उस साज ने साज बजाया है
क्या मांगु यह भी भूल गया,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

पाए का पार ना पाया है।bd।

जगदिश के गुण ये प्रेम
नगर हे प्रेम करें,
यहाँ नेम नही बस भाव धरें,
यहाँ विधी विधान का काम नही,
वो प्रेम वशीभूत आया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

जगदिश के गुण को जिसने भी,
अपने मुख से जो गाया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

रचनाकार – श्री सुभाषचन्द्र जी त्रिवेदी।
7869697758

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com